ईरानी क्रांति के चालीस साल बाद

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- रमिन जहानबेगलो (निदेशक, महात्मा गांधी सेंटर फॉर पीस, जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, सोनीपत)

09 फरवरी, 2019

"एक राजनीतिक परिवर्तन का संकेत जो कि आसान नहीं है, लेकिन यह ईरानी सत्ता को उखाड़ फेंकने में सक्षम होगा।"

फ्रेडरिक नीत्शे ने उल्लेखनीय सटीकता के साथ भविष्यवाणी की कि 20वीं शताब्दी को दार्शनिक विचारों के नाम पर लड़े गए महान युद्धों द्वारा चिह्नित किया जाएगा। लेकिन नीत्शे यह अनुमान नहीं लगा सका कि 20वीं सदी के अंत में शिया धर्मतंत्र स्थापित करने के लिए भगवान के नाम पर क्रांति होगी। 1978-1979 की ईरानी क्रांति इस्लाम के आधुनिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण विकास था और इसका दुनिया भर में सभी आंदोलनों पर व्यापक प्रभाव पड़ा, विशेष रूप से वे जो राजनीतिक सक्रियता के लिए इस्लामी फ्रेम का उपयोग कर रहे थे।

कुछ, जैसे फ्रांसीसी विचारक मिशेल फाउकॉल्ट ने उत्साहपूर्वक ईरानी क्रांति को बिना आत्मा की दुनिया के रूप में घोषित किया। इतिहास के आरंभ में, फारस ने राज्य का आविष्कार किया और इस्लाम पर अपने मॉडल प्रदान किए। इसके प्रशासक ने खिलाफत की। लेकिन इसी इस्लाम से इसने एक ऐसा धर्म प्राप्त किया जिसने अपने लोगों को राज्य की शक्ति का विरोध करने के लिए असीम संसाधन दिए। एक 'इस्लामिक सरकार' के लिए, क्या किसी मेल-मिलाप, विरोधाभास या किसी नई चीज की दहलीज को देखना चाहिए? फाउकॉल्ट के बाद, हम कह सकते हैं कि शुरू से ही, ईरानी क्रांति विरोधाभास और अप्रत्याशित ट्विस्ट से भरा एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन बनकर रह गई।

धार्मिक नियम

ईरानी क्रांति आश्चर्यजनक नहीं थी क्योंकि यह एक सम्राट के पतन का कारण बनी, लेकिन जिस तरह से लोगों ने खुद को संगठित किया और बड़े पैमाने पर प्रदर्शनों में भाग लिया। कई अन्य क्रांतियों की तरह, इसने कई समूहों, वर्गों और दलों को एकजुट किया, जो विभिन्न विचारधाराओं के बावजूद, सभी पुराने शासन के खिलाफ थे।

इसके अलावा, फ्रांसीसी और बाद में रूसी क्रांतियों के रूप में ईरानी क्रांति में, गठबंधन बहुत लंबे समय तक नहीं चला और ईरानी मौलवियों की प्रमुख भूमिका रही। लेकिन, दिलचस्प बात यह है कि 1906 की संवैधानिक क्रांति के बाद से ईरान में सभी प्रमुख

राजनीतिक आयोजनों में पादरी की मौजूदगी के बावजूद, अधिकांश गैर-मौलवी, जो ईरान के शाह के विरोध में थे, ने धार्मिक या धर्म गुरुओं के शासन की संभावना को कम करके आंका।

ईरान के अंदर और बाहर के कई पर्यवेक्षकों के लिए, 1979 में हुई क्रांति अग्रणी रहस्यमय प्रतीत होती है। लेकिन, दुर्भाग्य से, जो लोग जल्दबाजी और भावनात्मक रूप से ईरानी क्रांति के कारणों और शाह के पतन के कारणों को समझाने की कोशिश करते हैं, वे आम तौर पर एक या दूसरे विशिष्ट मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करते हैं जैसे कि शासन में भ्रष्टाचार, इसके शासन के अलोकतांत्रिक तरीके, दमन का प्रभाव या अमीर और गरीब के बीच की आर्थिक खाई।

सामाजिक तनाव

यदि हम ईरानी क्रांति को न केवल एक राजनीतिक घटना के रूप में बल्कि एक मनोवैज्ञानिक ऐतिहासिक घटना के रूप में मानते हैं, जैसा कि जर्मनी में 1933 में हिटलर के सत्ता में आने के साथ हुआ था, तो हम समझ सकते हैं कि 1978 में ईरान के कई लोगों ने वापस क्यों माना कि आयतुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व के प्रति एक संवेदनशील स्वभाव था।

सही मायने में, ईरानी क्रांति में खुमैनी की सफलता का निश्चित रूप से दैवीय शक्ति से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन यह देखते हुए कि ईरानी आबादी सदियों से राजाओं के दैवीय अधिकार पर विश्वास करती थी, इसलिए थोड़ा आश्चर्य होता है कि लोग राजनीतिक व्यावहारिकता की तीव्र भावना रखने के बजाय ऐसे विचारों के प्रति ग्रहणशील थे। इसलिए, खुमैनी का नेतृत्व, ईरान में इस्लामिक गणराज्य की स्थापना के बाद, इसे देशभक्तिपूर्ण शब्दों में समझा जा सकता है। सामाजिक-धार्मिक रवैये के तात्कालिक परिणाम के रूप में क्रांति के नेता के रूप में खुमैनी की भूमिका को संस्थागत बनाना था।

लेकिन कहानी का एक राजनीतिक पक्ष यह भी है कि 1963 के बाद से, शाह और उनके साम्राज्यवाद-विरोधी और लोकलुभावन बयानबाजी के प्रति रूखे रवैये के लिए खुमैनी न केवल आम ईरानियों के बीच लोकप्रिय थे, बल्कि वे और उनके अनुयायी ईरान में इस्लामी शासन की स्थापना के लिए पूरी तरह से तैयार और संगठित भी थे।

नतीजतन, धर्मनिरपेक्ष आधुनिकीकरण के सभी मिथकों को चुनौती और आधुनिकता की सभी राजनीतिक विचारधाराओं को चकनाचूर करते हुए इस्लामिक स्टेट आधुनिक दुनिया में पहला धर्मशासित देश बन गया, जिसने वेलायत-ए-फकीह के शिया विचार या न्यायवादी के शासन कोसंस्थागत बनाया। हालाँकि, फकीह के रूप में खुमैनी की भूमिका के संस्थागतकरण में निहित तनाव का प्रबंधन नहीं किया गया, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच मौजूद है।

कुल इस्लामीकरण और राजनीतिक समूहों पर आतंक के शासन के बावजूद, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, साक्षरता का उदय और ईरानी समाज की सुदृढ़तता के कारण ईरानी नागरिक समाज की उन्नति हुई। इस्लामी शुद्धता के नाम पर युवा ईरानियों के रोजमर्रा के जीवन में सांस्कृतिक राजनीति का समावेश, उलटे रुख और इस्लामी शासन के साथ टकराव की भावना को पैदा करता है।

आज ईरान को देखते हुए कोई भी यह कह सकता है कि इस्लामिक राज्य और ईरानी युवाओं, विशेष रूप से युवा महिलाओं के बीच बढ़ती जनरेशनल खाई कभी व्यापक नहीं रही है। अब यहाँ एक प्रश्न उठता है कि अगर ईरानी क्रांति में भाग लेने वाले कुछ बेहतर देखना और सुनना चाहते थे, तो, फिर क्यों क्रांति ऐसी हिंसा और अत्याचार में तब्दील हो गयी। जिसने अभी तक ईरान को पंगु बना रखा है?

ये सवाल अनुत्तरित हैं, लेकिन एक बात निश्चित है कि ईरान एक राजनीतिक परिवर्तन की ओर जा रहा है। एक राजनीतिक परिवर्तन तुरंत और आसानी से संभव नहीं है, लेकिन यह उसी निश्चितता के साथ होगा जैसा पिछली क्रांति में हुआ था।

GS World टीम...

ईरान की क्रांति

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में ईरान ने 1979 की इस्लामिक क्रांति की वर्षगांठ के अवसर पर 1,350 किलोमीटर से भी ज्यादा दूरी तक मार करने वाली नई होविज क्रूज मिसाइल के सफल परीक्षण किया है।
- इस क्रांति का सफल होने में करीब डेढ़ दशक का समय लगा था।
- ईरान ने इजराइल और मध्य-पूर्व स्थित पश्चिमी ठिकानों से होने वाले हमलों के मद्देनजर अपनी मिसाइलों की मारक क्षमता को 2,000 किलोमीटर तक सीमित किया है, लेकिन वाशिंगटन और उसके सहयोगियों ने तेहरान पर हथियारों की होड़ में शामिल होने का आरोप लगाया है, जिससे यूरोप को भी खतरा है।

मुख्य बिंदु

- ईरान की इस्लामिक क्रांति सन् 1979 में हुई थी, जिसने ईरान के शाह मोहम्मद रजा पहलवी को अपदस्थ कर, आयतुल्लाह रुहोल्लाह खुमैनी के अधीन एक लोकप्रिय धार्मिक गणतंत्र की स्थापना की।
- शाह 1941 से सत्ता में थे लेकिन उन्हें निरंतर धार्मिक नेताओं के विरोध का सामना करना पड़ता था।
- इससे निपटने के लिए शाह ने इस्लाम की भूमिका को कम करने, इस्लाम से पहले की ईरानी सभ्यता की उपलब्धियां गिनाने और ईरान को एक आधुनिक राष्ट्र बनाने के लिए कई कदम उठाए, जिससे मुल्लाह और चिढ़ गए और उन्हें अमरीका का पिट्ठू कहने लगे।

- आयतुल्लाह खुमैनी भी शाह के सुधारों के खिलाफ थे। तभी तो उन्हें गिरफ्तार करके देश से निकाल दिया गया था।
- इस बीच असंतोष बढ़ा और साथ ही शाह का दमन चक्र भी। लेकिन जब सरकारी प्रेस में आयतुल्लाह के खिलाफ आपत्तिजनक कहानी छपी, तो लोग भड़क उठे।
- दिसबर, 1978 में कोई बीस लाख लोग शाह के खिलाफ प्रदर्शन करने शाहयाद चौक में जमा हुए, लेकिन इस बार सेना ने उन पर कार्रवाई करने से इनकार कर दिया।
- फिर प्रधानमंत्री डॉ शापोर बख्तियार की मांग पर 16 जनवरी, 1979 को शाह और उनकी पत्नी ईरान छोड़कर चले गए। प्रधानमंत्री ने सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया और खुमैनी को ईरान आने दिया।
- प्रधानमंत्री चुनाव कराना चाहते थे लेकिन खुमैनी ने उनकी एक न चलने दी और खुद ही एक अंतरिम सरकार का गठन कर लिया।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **'होविज क्रूज मिसाइल' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-**

   1. हाल ही में ईरान द्वारा होविज क्रूज मिसाइल का परीक्षण किया गया है।
   2. ईरान ने यह परीक्षण 1979 की इस्लामिक क्रांति की वर्षगांठ के अवसर पर किया है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

1. **Consider the following statements regarding the Hoveizeh cruise missile-**

   1. Recently, Hoviezeh cruise missile has been tested by Iran.
   2. Iran tested it on the anniversary of Islamic revolution of 1979.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2
   (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: ईरान में धार्मिक नियम के प्रति युवाओं का बदलता दृष्टिकोण किस प्रकार राजनीतिक परिवर्तन में सहायक हो सकता है? चर्चा कीजिए।

Q. How changing views of the youths in Iran regarding the religious rules will helpful in political change? Discuss.

(250 Words)

नोट : 8 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।

Com